द्वितीय
संस्करण
2022-23

संस्कृति

आदि से अनंत तक

सांस्कृतिक चेतना परिषद्

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एंव प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर

आज़ाद
रहें विचारों से पर
जुड़े रहें संस्कारों से

अस्माकं संस्कृति,
अस्माकं कर्तव्यं

सांस्कृतिक चेतना परिषद, पन्तनगर
अस्माकं संस्कृति, अस्माकं कर्तव्यं

डा० मनमोहन सिंह चौहान
कुलपति

समूह मे साथ-साथ जीवन व्यतीत करने के लिये आवश्यकता है कुछ नियमों , विधानो की जो व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों, व्यवहारों व क्रियाओं को निर्देशित व नियमित कर सकें। सामूहिक जीवन के ये नियम, विधान, व्यवहार प्रणालियाँ, मूल्य, मानक एवं आचार-विचार व्यक्ति को उसकी संस्कृति प्रदान करती है। जिस प्रकार संतोषजनक फल विकसित करने से पहले वृक्ष को प्रकृति में होने वाले तनाव एवं परिवर्तन से गुज़रने के लिए अपनी जड़ों को सशक्त व कुशल रखना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार देश का नेतृत्व करती इस युवा पीढ़ी को फल प्राप्ति से पहले होने वाले सामाजिक व मानसिक तनाव को पार करने हेतू अपनी संस्कृति की गहराइयों एवं उसके वास्तविक स्वरूप से भली भांति परिचित होना आवश्यक है। हमारी संस्कृति के गहन अध्ययन में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर है, जिसे परिश्रम कर रहा हर व्यक्ति खोजता रहता है।

गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, विश्व के तेजी से उभरते शैक्षिण संस्थानों में से एक है, जिसके विद्यार्थी कईं वर्षों से देश की आवश्यकताओं एवं उपलब्धियों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सांस्कृतिक चेतना परिषद्, गठन के समय से ही राष्ट्र निर्माण के कार्यों के प्रति संकल्पित है।
'संस्कृति' पत्रिका में विद्यार्थियों को सामाजिक विषयों और राष्ट्र हित से जुड़े मुद्दों को अपने लेख कौशल के द्वारा व्यक्त करते देख अत्यंत हर्ष की अनुभूति होती है। यह केवल उनकी लेखन व चित्रकला को ही नहीं अपितु उनके भीतर बसे देश प्रेम को जागृत करने का एक अच्छा माध्यम सिद्द होता है।

मैं अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं सांस्कृतिक चेतना परिषद् से जुड़े सभी लोगों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए हार्दिक सुभकामनायें देता हूँ, तथा आशा करता हूँ की भविष्य मैं भी परिषद् द्वारा राष्ट्र की संस्कृति को समर्पित एसे अन्य प्रयास किये जायेंगे।

डा० शिवेन्द्र कुमार कश्यप

अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय

भारत उत्सवों का देश है। युवा शक्ति से परिपूर्ण यह राष्ट्र निरंतर प्रसन्नचित्त हो विजय के पथ पर अग्रसर है। ध्रुव, प्रहलाद, नचिकेता के परंपरा वाले इस देश के युवा संस्कृति तत्व को धारण किए यथाशक्ति इसके गौरव को जन जन तक पहुंचाने के भगीरथ प्रयास में जुटे हैं।

इसका ही प्रत्यक्ष उदाहरण है पंतनगर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा अभिकल्पित यह "संस्कृति" पत्रिका। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है की छात्रों द्वारा इस पत्रिका के द्वितीय संस्करण को पूरी तन्मयता के साथ अभिकल्पित करने का कार्य किया गया है। कालगणना के उत्सव को विश्वविद्यालय में आयोजित कर परिषद् सांस्कृतिक मूल्यों के प्रवाह को निरंतर चलायमान रख रहा है।

मैं इस अनवरत प्रयास हेतु अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं सांस्कृतिक चेतना परिषद् की संपूर्ण टीम को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

डा० बृजेश सिंह

अधिष्ठाता छात्र कल्याण

पूरे विश्व में भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी विशेषता इसकी सहिष्णुता रही है। भारतीय जीवनशैली प्राकृतिक जीवनशैली की दृष्टि देती है। किसी भी देश के विकास में उसकी संस्कृति का बहुत योगदान होता है। देश की संस्कृति उसके मूल्य, लक्ष्य, प्रथाएं और साझा विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय संस्कृति कभी कठोर नहीं रही इसलिए यह आधुनिक काल में भी गर्व के साथ जीवित है। यह दूसरी संस्कृतियों की विशेषताएं सही समय पर अपना लेती है और इस तरह एक समकालीन एवं स्वीकार्य परंपरा के रूप में बाहर आती है। समय के साथ चलते रहना भारतीय संस्कृति की सबसे अनूठी विशेषता है। पाश्चात्यीकरण के इस दौर में संस्कृति पत्रिका के रूप में युवाओं के सार्थक प्रयास इस सहस्त्रों वर्ष पुरानी सभ्यता की नींव को सशक्त करने की ओर एक सराहनीय कदम है।

इस विशाल भूभाग की वंदनीय मृदा को समर्पित यह संस्करण अवश्य ही छात्र समूह में राष्ट्र हित को प्राथमिकता देने के विचारों को जागृत करेगा। सांस्कृतिक चेतना परिषद् को इस प्रशंस्य पहल के लिए अशेष शुभकामनाएं।

डा० विनीता राठौड़

स्टाफ काउंसलर, सांस्कृतिक चेतना परिषद्

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। जहां अन्य देशों की संस्कृतियाँ समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है। इस सहिष्णु प्रकृति ने भारतीय संस्कृति को दीर्घ आयु और स्थायित्व प्रदान किया है।

सांस्कृतिक चेतना परिषद् के सार्थक प्रयासों द्वारा प्रकाशित संस्कृति पत्रिका का दूसरा संस्करण छात्र समूह में राष्ट्र निर्माण एवं स्वदेशी संस्कृति के प्रति जागरूकता की भावना के सृजन को वचनबद्ध है। मैं पत्रिका से जुड़े सभी छात्र सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं एवं आशा करती हूं की इस सराहनीय पहल से जुड़ने एवं इसका हिस्सा बनने वाले युवा लक्ष्य प्राप्ति के पथ पर अग्रसर हों।

रवि कुमार झा

छात्र अध्यक्ष, सांस्कृतिक चेतना परिषद्

कहा गया है जो संततियां अपने इतिहास को सम्मान नही देती, भविष्य उन्हें कभी आधार नहीं देता। गौरवशाली इतिहास और स्वर्णिम भविष्य के मध्य विचारशील वर्तमान इस बात का द्योतक है की भारत उज्जैनी यात्रा पर अग्रसर है।

राष्ट्र गौरव एवं संस्कृति के बीज को हर भारतीय युवा हृदय में धारण करता है। विश्व की संस्कृतियों के उत्थान पतन के मध्य भारतीय संस्कृति माँ गंगा के भांति अविरल रूप से विद्यमान रही और इस संस्कृति के तट पर पुष्पित पल्लवित नवकोपलों को सींचती रही।

उन्हीं सिंचित विचारों का ही एक परिणाम है यह संस्कृति पत्रिका। यह समर्पित है उन गुरुओं को जिन्होंने हमें यह प्रेरणा दी। यह समर्पित है उस गौरवशाली इतिहास को जो हमारे ऊर्जा का स्रोत है। यह समर्पित है उन युवाओं को जो मनसा, वाचा, कर्मणा भारत को विश्व गुरु बनाने का साहस रखते हैं।

रजनीश पाण्डेय
महासचिव, सांस्कृतिक चेतना परिषद्

कहते हैं की संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है, और यदि उस संस्कृति ने सदियों से मानव जीवन को सराहा हो तो उसके विस्तार की परिकल्पना मात्र से ही गौरव महसूस होता है। भारतीय संस्कृति को विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक एवम अनेक संस्कृतियों की जननी माना जाता है। सदियों का उत्पीड़न, गुलामी एवम अत्याचार भी इस संस्कृति का खण्डन न कर पाए एवम इसने सदियों से भारत को एक सूत्र में बांधे रखा और अनेकता में एकता का जीवित स्वरूप प्रस्तुत किया।

आज विश्व पटल पर भारत का G- 20 का नेतृत्व संभालना हो या 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होने का लक्ष्य हो, यह भारत का विश्वगुरु होना स्वतः ही प्रमाणित करता है।

इस पत्रिका के पहले संस्करण को पाठको द्वारा जिस प्रकार का स्नेह एवम् प्रोत्साहन मिला उसी से प्रेरणा लेकर हम 'संस्कृति' का दूसरा संस्करण प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारे इस प्रयास में आपके समर्थन की आशा करते है।

जयतु संस्कृति, जयतु भारतम ।

उर्वी राय
मुख्य संपादक

साहिल भट्ट
उपाध्यक्ष

नंदिनी मिश्रा
उप महासचिव

इतिहास की जननी, सभ्यताओं की सभ्यता एवं तर्क का जन्मस्थान - इस पावन भूमि के असंख्य रंगों को शब्दों की सीमाओं में समेट पाना संभव नहीं है। और जब इस राष्ट्र की चेतना विश्व के सबसे बड़े युवा जनमानस में बसती हो - तब यह राष्ट्र विश्व के मस्तक पर रोली के समान चमकता दिखाई देता है। इस जीते जागते राष्ट्रपुरुष को सचेत रखने हेतु महत्वपूर्ण है इस विशाल युवा जनमानस का सदा अपनी जड़ों के संपर्क में बने रहना।सहस्त्रों वर्षों से मातृ समान पूज्य इस भूमि की आराधना में तत्पर रहते इसके असंख्य सपूतों के क्रांतिकारी प्रयासों एवं ऊर्जा के आधार पर इस राष्ट्र की सशक्त नींव की स्थापना हुई है। अब यह दायित्व भावी संतति का है, की वे इस सभ्यता के अस्तित्व के संरक्षण को सम्पूर्ण मानसिक चेतना के साथ अपना कर्तव्य मान लें।

इस पत्रिका के द्वारा हमारा प्रयास है की युवा उस भारत से परिचित हो सकें जिससे वह जन्म लेने के पश्चात भी अपरिचित हैं।

हमे पूर्ण विश्वास है की शब्दों का यह संकलन युवा मस्तिष्क को सकारात्मकता की ओर ले जाने में सफल रहेगा।

अनुक्रमणिका

सांस्कृतिक चेतना परिषद् के सदस्य ६

श्री अन्न- कृषि प्रधान देश की नई पहचान ८

चित्ररथ १०

कर्तव्य पथ पर अग्रसर- विश्व गुरु भारत १२

हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीयकरण १४

धारणीय विकास -र्यावरण और भारतीय सभ्यता का सामंजस्य १६

अंतर्मन की कलम से १८

विलक्षण खगोलीय पद्धति- भारतीय पंचांग २०

भारतीय संस्कृति- समकालीन स्वरूप पर मध्यकालीन प्रभाव २२

भारतीय दर्शन के मनीषी दार्शनिक २४

भारतीय वेदान्त दर्शन २६

उल्लास उमंग- बारह महीनों के संग २७

कलावीथि २८

सांस्कृतिक चेतना परिषद्
के सदस्य

रवि कुमार झा
अध्यक्ष

रजनीश पाण्डेय
महासचिव

प्रभात कुमार सिंह
मुख्य गतिविधि समन्वयक

ऐशना श्रीवास्तव
मुख्य गतिविधि समन्वयक

मल्लिका त्रिपाठी
मुख्य संपादक

उर्वी राय
मुख्य संपादक

साहिल भट्ट
उपाध्यक्ष

प्रियांशु दीक्षित
उप महासचिव

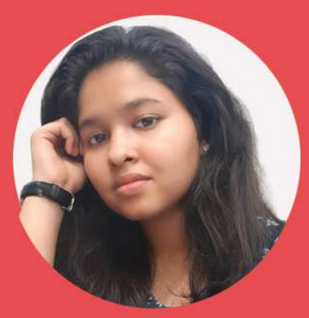

नंदिनी मिश्रा
उप महासचिव

सुषमा स्वामी
कोषाध्यक्ष

रौशन साहनी
गतिविधि समन्वयक

मनीष नेगी

विनय नगरकोटी

विधि तिवारी

भरत सिंह

कपिल दत्त भट्ट

विवेक नेगी

अंकेश श्रीवास्तव

पीयूष कुमार

भूमिका तिवारी

आशुतोष धस्माना

प्रियांशु कुमार झा

मनीष बिश्नोई

विशाल कुमार

मनीषा कंडवाल

शगुन गोयल

निमिषा भट्ट

ऋचा जोशी

देवेंन्द्र सहारण

दीपांशु मुकाती

अदिति बिष्ट

कृतिका

आस्था रमोला

आयुषी सुब्बा

प्रियंका

रवीना गुसाईं

राजबीर सिंह

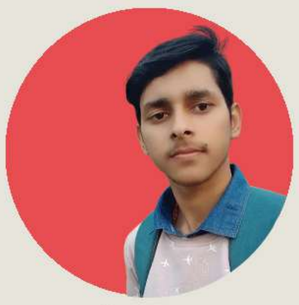
हर्षित दुर्गापाल

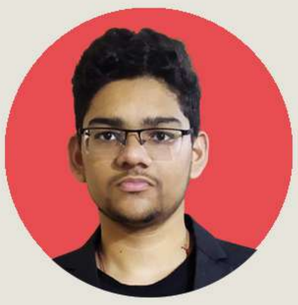
आश्रय शुक्ला

तन्मय लोशाली

पूर्णिमा गिलवाल

शिक्षा रावत

कनिका पाण्डेय

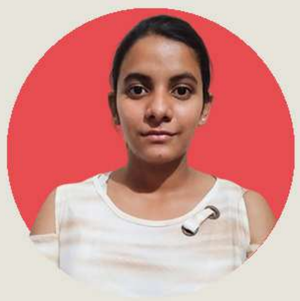
दीपांशी बमेटा

प्रज्ञा जैन

पूजा जोशी

हर्षल तिवारी

रचित पाण्डेय

सारांश पाण्डेय

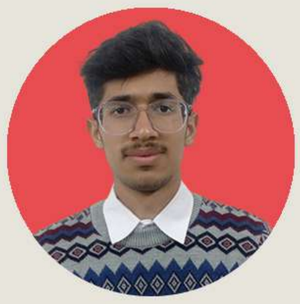
हर्षित उप्रेती

वंशिता

प्रद्युम्न शर्मा

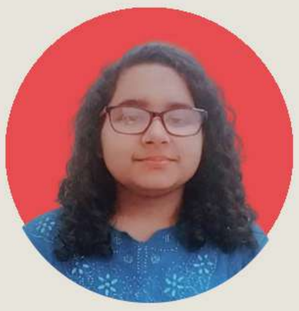
कविता पन्त

भूमिका काण्डपाल

खुशी

श्री अन्न- कृषि प्रधान देश की नई पहचान

भारतीय समाज की गहराइयों को टटोलने पर आप पाएँगे कि मोटे अनाज हमारे खान पान की आदतों से लेकर अनुष्ठानों तक का अभिन्न अंग रहे हैं।

साहित्यिक रचनाओं एवं प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करने पर हमें भारत के इस पोषक अनाज के विशिष्ट प्रचलन की जानकारी प्राप्त होती है। कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यंत के दरबार में शकुंतला को भेजते समय वह दृश्य दिखाया गया है जहाँ पर ऋषि कण्व कंगनी को बरसा रहे थे जो कि इस अनाज के शुभ होने का प्रतीक है। सुश्रुत की संहिता में भी इन अनाजों का विशेष वर्गीकरण किया गया है। अगर कौटिल्य के अर्थशास्त्र को भी पढ़ा जाए तो उसमें भी इन मोटे अनाजों का उल्लेख है और इनसे संबंधित पाक शैली और उनके विभिन्न गुणों का भी वर्णन उसमें पाया जाता है। साहित्य के साथ ही ऐसे कई कहावतें भी हैं जिनसे हमें मोटे अनाज के सेवन के तरीकों के बारे में पता चलता है।

मछुवा मीन; चीन संघ दही;

औ कोदो के भात; दूध संग सही

अर्थात मछली के संग रागी, दही के साथ चीना और कोदो के चावल के साथ दूध का सेवन उत्तम है।

परन्तु इतने इतिहास के पश्चात भी आज मोटा अनाज हमारी थाली, रसोई और जीवन सभी जगह से गायब है। इसीलिए इस क्षण आवश्यक है हमारे खान-पान के तरीकों की समीक्षा करने की, और उचित प्रयासों के साथ इस बहु:उपयोगी अनाज को पुनः भारतीय समाज की समृद्ध परंपरा से जोड़ने की।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया है। यह प्रस्ताव भारत द्वारा पेश किया गया था जिसे 70 से ज्यादा देशों ने समर्थन दिया; इसका पारित होना भारत के लिए गौरवान्वित होने का अवसर है। इस प्रस्ताव के पारित होने के पश्चात भारत सरकार ने मोटे अनाज को बजट 2023 में श्री अन्न की उपाधि से सम्मानित करते हुए उसकी घोषणा की ।

इसको मनाने का उद्देश्य मोटे अनाजों के पोषण और स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता को बढ़ाने के साथ-साथ इन पोषक अनाजों की खेती व खपत को बढ़ावा देना है।

इससे खाद्य व पोषण सुरक्षा के लिए भोजन में इन अनाजों को अपनाने के प्रति वैश्विक जागरूकता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस घोषणा से मोटे अनाज की खेती करने वाले किसानों को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है तथा कई किसानों को मोटे अनाज उगाने के लिए प्रोत्साहन मिला है। मोटे अनाज में ज्वार,बाजरा,मक्का,रागी,मंडुआ,झंगोरा आदि आते हैं। ज्वार खरीफ मौसम की मुख्य फसलों में से एक है - यह कम वर्षा वाले क्षेत्र में अनाज तथा चारा दोनों उद्देश्यों के लिए बोई जाती है। ज्वार की अधिकांश प्रजातियां गर्मी के लिए सहिष्णु मानी जाती है तथा नाइट्रोजन युक्त होती हैं। ज्वार को पुराने समय से ही शक्तिशाली अनाज माना गया है। बाजरा भी खरीफ की प्रमुख फसलों में से एक है। बाजरा की खेती कम वर्षा एवं कम उर्वरता वाली मिट्टी में भी की जा सकती है, किंतु इस फसल के लिए अधिक तापमान की आवश्यकता पड़ती है - इसी कारण से बाजरा की खेती मुख्य तौर पर अफ्रीका महाद्वीप के देशों में की जाती है। भारत में राजस्थान राज्य बाजरा के उत्पादन के लिए प्रमुख है। बाजरा मधुमेह के रोगियों के लिए कारगर सिद्ध होता है। बाजरा में प्रोटीन,विटामिन बी-6, आयरन, जिंक आदि पोषक तत्व मौजूद होते हैं।

श्री अन्न -भारत के लिए महत्वपूर्ण आहार-

जैसा कि हमें ज्ञात है कि भारत में सबसे अधिक युवा आबादी मौजूद है जिसका अर्थ है कि भारत अभी एक युवा देश है, एवं वह प्रगति के पथ पर अग्रसर है, किंतु आजकल भारत का युवा मैदा, अजीनोमोटो आदि युक्त हानिकारक खाद्य पदार्थों का सेवन अधिक करने लगा है।

सरकार द्वारा मोटा अनाज से जुड़ी योजनाओं से देश के युवाओं को मोटा अनाज के लाभो की जानकारी प्राप्त होगी तथा उनका मानसिक व शारीरिक विकास होगा, इसके उपरांत वह देश के विकास में लाभदायक साबित होंगे। अब तक मोटा अनाज सकल घरेलू उत्पाद (GDP) मे बहुत कम भागीदारी दे पाता था। संयुक्त राष्ट्र तथा भारत सरकार की घोषणा की वजह से इसे एक नई पहचान मिली है , जिससे ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अब मोटा अनाज भी मुख्य तौर पर भागीदारी देगा। श्री अन्न की उपाधि से मोटे अनाजों को एक नई पहचान मिली है जिसकी वजह से अब प्रमुख आबादी मोटे अनाजों को अपने आहार के तौर पर अपनाएगी, जिससे मोटे अनाजों की खपत में बढ़ोतरी होगी। परिणाम स्वरूप मोटे अनाजों के उत्पादक किसानों की फसलों की बिक्री अधिक होगी तथा उनकी आय में बढ़ोतरी होने का अनुमान है, साथ ही किसानों के जीवन में खुशहाली आएगी तथा अन्य किसान भी मोटे अनाजों को उगाने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इन सभी बातों के कारण ोटा अनाज सही तौर पर श्री अन्न कहलाएगा।

श्री अन्न – कृषि प्रधान देश की नई पहचान है।

- हर्षित दुर्गापाल
कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

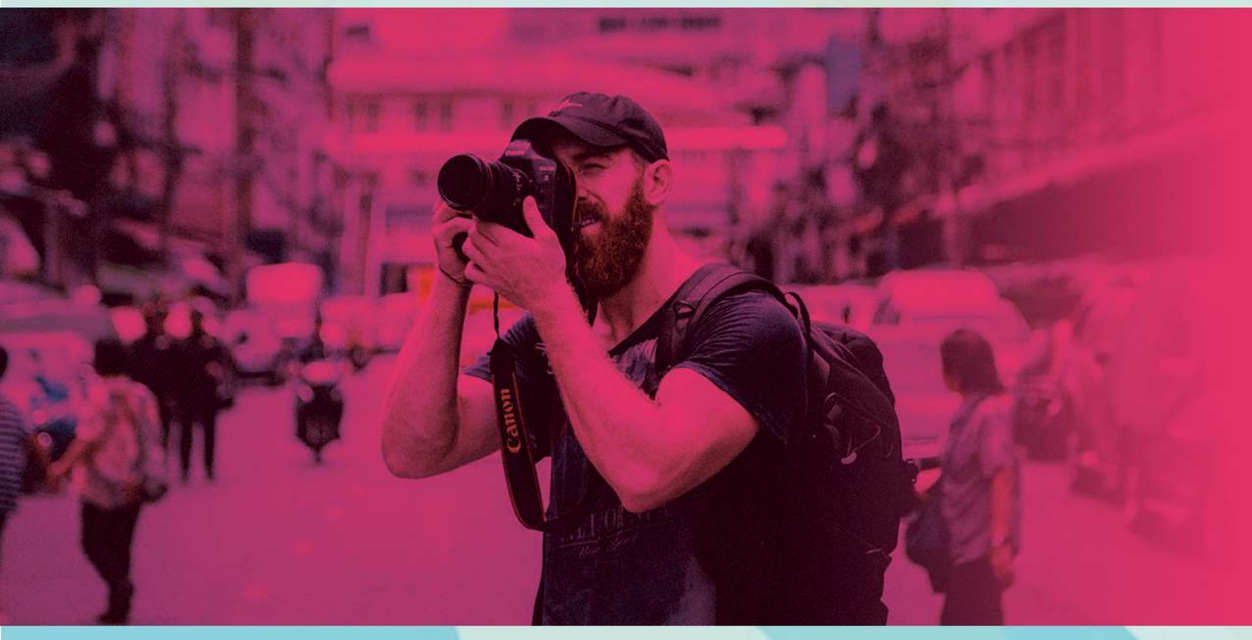

चित्ररथ

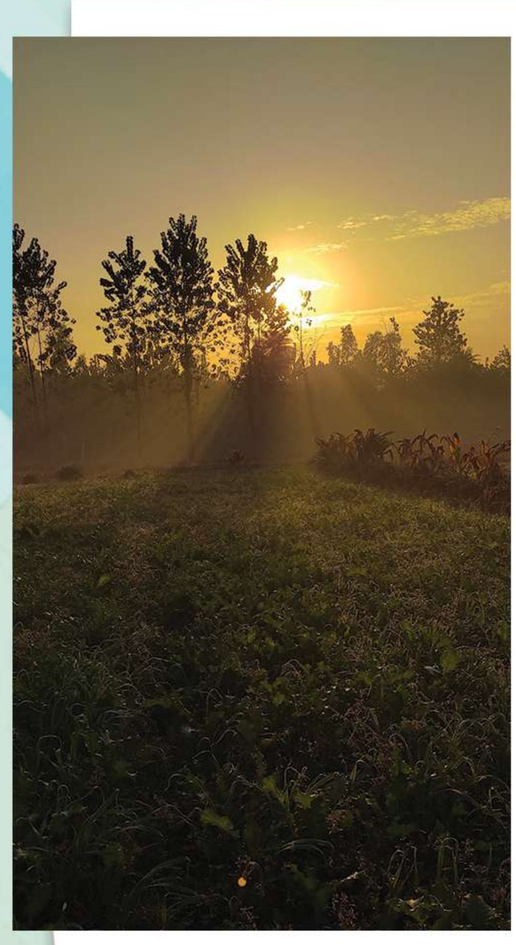

सौरभ सैनी
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष

दीक्षा जोशी
कृषि महाविद्यालय, तृतीय वर्ष

आशुतोष घस्माना
कृषि महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

श्रेया गोस्वामी
कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

रितिका बरगाली

कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

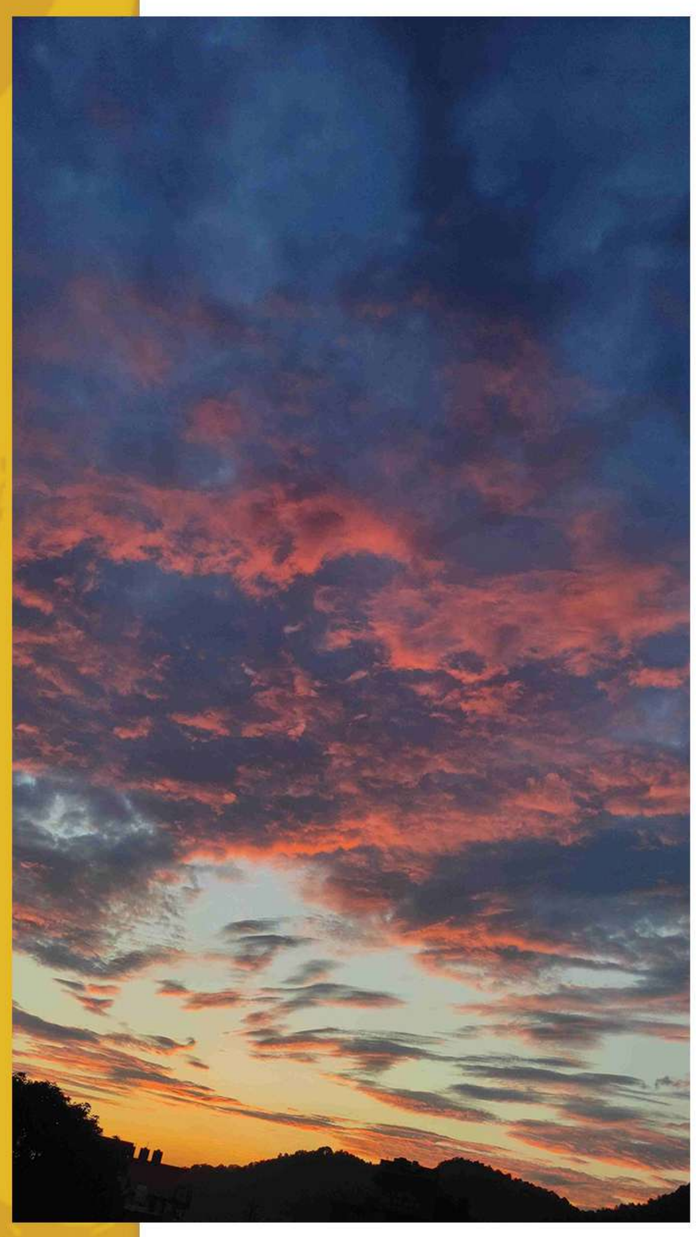

अर्पित कौशिक

प्रोद्योगिकी महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

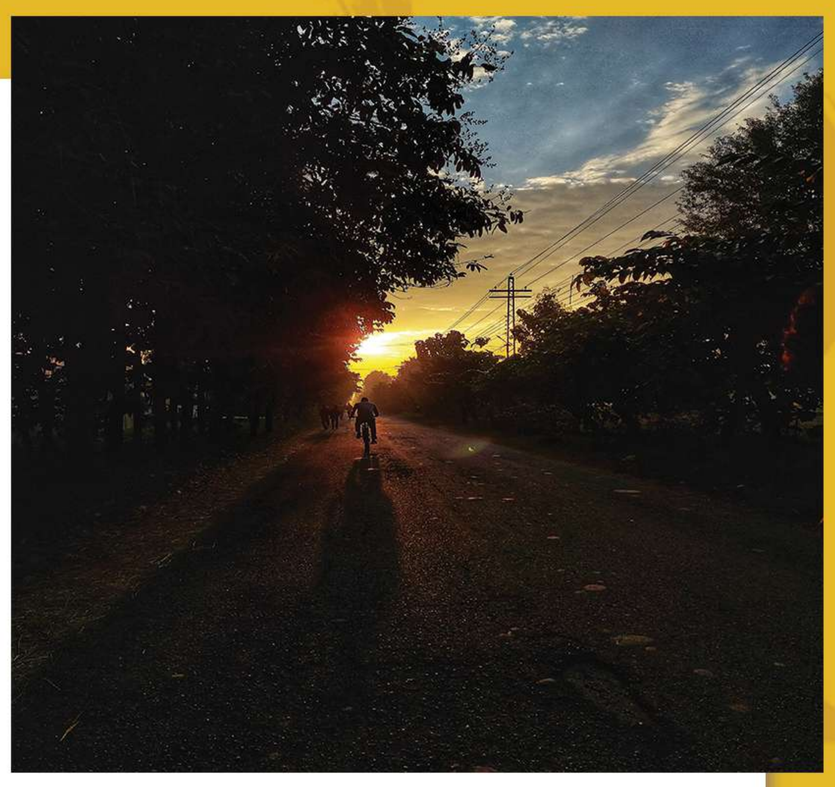

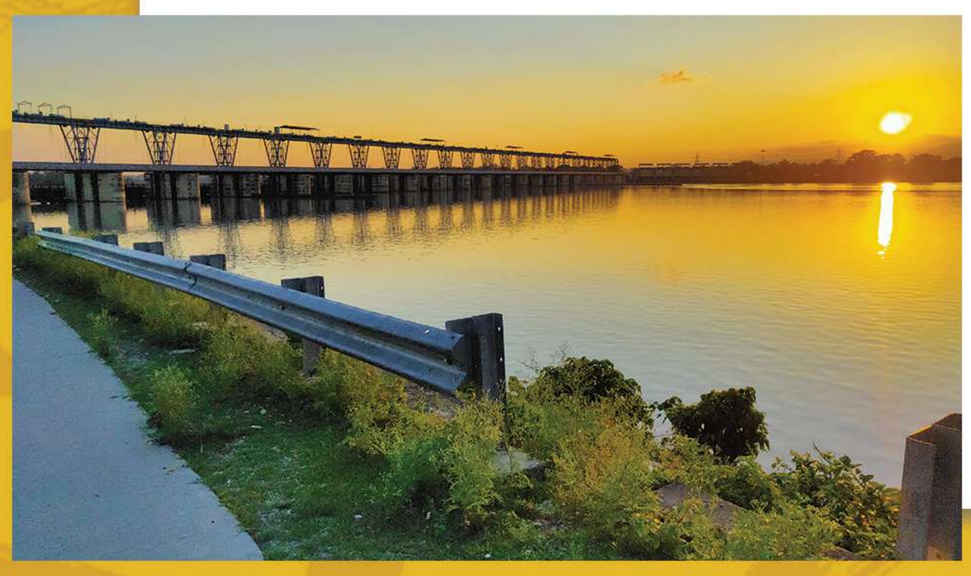

साक्षी धामी

कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

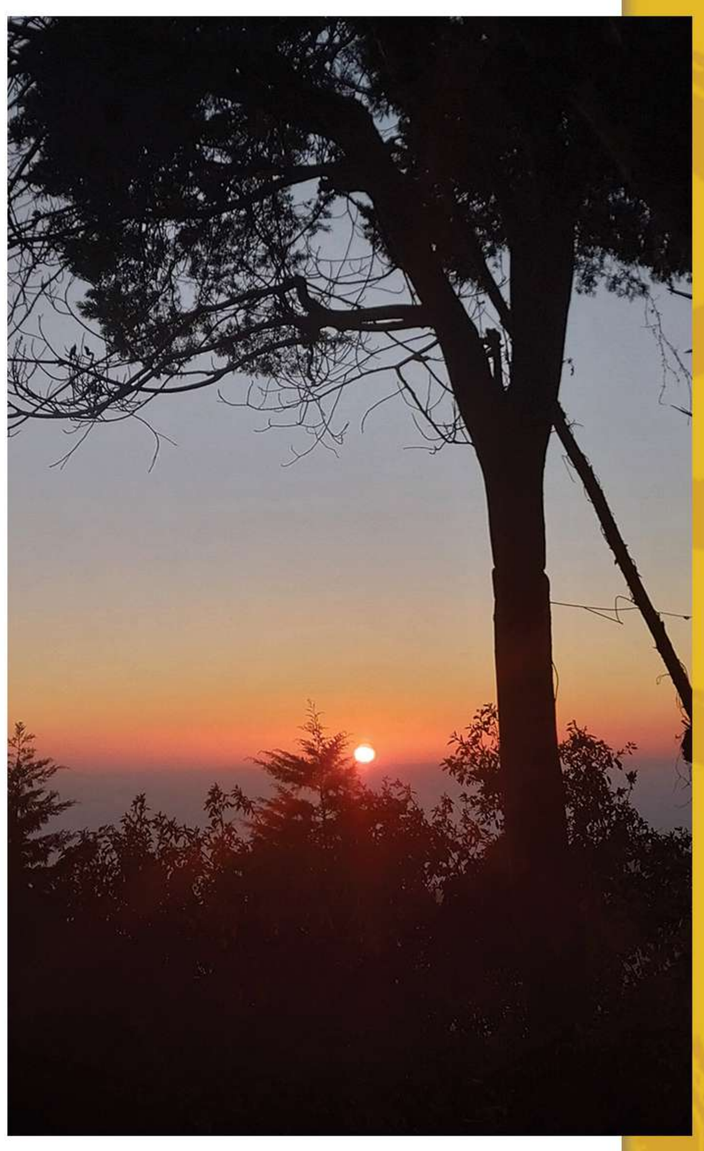

वेनु तिवारी

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

कर्तव्य पथ पर अग्रसर-विश्व गुरु भारत

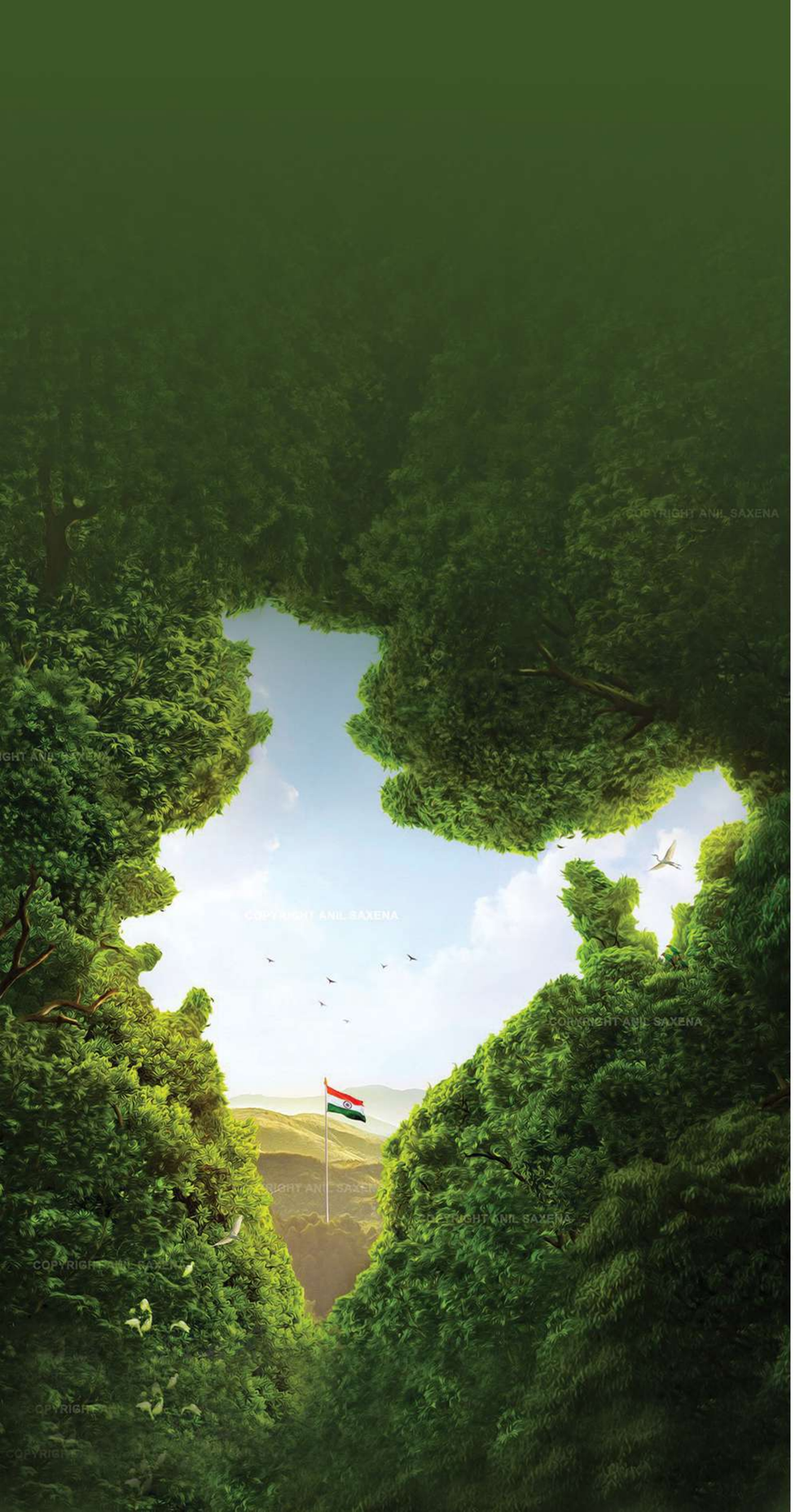

"भारद देसमेंद्रु पेयर सोल्लुवार-मिडिप्
भयंगोल्लुवार तुयर्प्पगै वेल्लुवार
भारदप् पोर वेन्द्र कण्णनरुलाल-तुयर
भार मरुवाल सेल्व भारमुरुवाल"

-भरथियार

महाकवि भरथियार का मानना था की ज्ञान में, आध्यात्म में, अन्न दान में, संगीत में, शाश्वत कविताओं में, वीरता में, सेनाओं के शौर्य में, दूसरों की सेवा में, जीवन के सत्य को खोजने में, एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों में भारत कि निपुणता को विश्व की कोई शक्ति झुठला नहीं सकती। जिस भारत का वर्णन महाकवि भरथियार ने अपनी कविता में किया है, आज उस भारत के आदर्श, आयाम, संकल्प, लक्ष्य तथा प्रतीक उसके अपने हैं। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि, हमारा यह देश निरंतर आगे बढ़ने की संकल्प यात्रा में अग्रसर है।

हाल ही में हमारी भारतीय नौसेना ने दासत्व कि निशानियों को उतारकर, छत्रपति शिवाजी के प्रतीक को धारण कर लिया है, जिन्होंने मुगल-काल में राष्ट्रीय-धरोहर को की गयी क्षति को सुधारने का भरपूर प्रयास किया। यह बदलाव केवल प्रतीकों तक ही सीमित नहीं है - यह बदलाव देश की नीतियों का भी हिस्सा बन चुका है। अंग्रेजों के ज़माने से चले आ रहे सैकड़ों कानूनों को बदला जा रहा है, हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी आज विश्व को चुनौती दे रही है। आज इस देश में क़ानूनी फैसला लेने वाले लोग, इसके विकास को अपना कर्त्तव्य समझते हैं, और यह कर्तव्य-पथ कोई ईंट-पत्थर का मार्ग नहीं, बल्कि यह भारत के लोकतांत्रिक अतीत और भारत के आदर्शों का जीवंत मार्ग है।

अगर इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो भारत सदैव से ही विश्व गुरु रहा है। भारत की संस्कृति का आधार विशाल एवं अगाध है –

जब पश्चिम ने वन फल खा कर, छाल पहन कर लाज बचाई
तब भारत से साम गान का स्वर्गिक स्वर था दिया सुनाई

भारत को विश्व गुरु बनाने का एक प्रमुख कारण , 'संस्कृत' का दुनिया पर प्रभाव भी रहा है, दुनिया की कोई भी भाषा संस्कृत के प्रभाव से अछूती नहीं रही। इतिहासकारों का मानना है कि यूरोपीय भाषाओं व बोलियों का विकास संस्कृत के संपर्क में आने के बाद ही प्रारंभ हुआ था। दुनिया का सबसे प्राचीन अभिलेख की बात करें तो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व मितन्य साम्राज्य के कई राजाओं के नाम संस्कृत भाषा से लिए गए थे। विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला था, जो पुरातन भारतीय विज्ञान का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां वेद-वेदांत, व्याकरण, अर्थशास्त्र, राजनीति, आदि जैसे

साठ से भी अधिक विषय पढ़ाए जाते थे, जहां पूरे विश्व भर से आकर लोग शिक्षा ग्रहण किया करते थे। सिकंदर के आक्रमण के समय तक्षशिला चिकित्सा शास्त्र का दुनियाभर में सर्वश्रेष्ठ स्रोत था।

"सर्वे भवंतु सुखिनः। सर्वे संतु निरामया: ।"

अर्थात् सभी सुखी रहें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देने वाला यह देश भारत, जो पूरी दुनिया को एकसमान चक्षुओं से देखता है, यह गुरुओं के द्वारा ही संभव है। शल्य चिकित्सा के धनवंतरी और शाश्वत कायचिकित्सा में भारद्वाज तथा आत्रेय आदि ऋषियों ने भारत भूमि का नाम रौशन किया। भारतीय पौराणिक ग्रंथों से प्राप्त होने वाला ज्ञान, उपदेश, कथाएं आदि तथा उससे भी बढ़कर भारत द्वारा योग विद्या पूरे विश्व के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। मूलतः, कहने का सार यही है कि भारत सदियों से विश्व गुरु था परंतु पिछले कुछ वर्षों में भारत का यह योगदान जो विश्व पटल पर हाशिए पर जा चुका था, उसे हर तरफ से एक नई अवधारणा के साथ उभार कर भारत अपनी पूरी क्षमता के साथ विश्व के सभी राष्ट्रों के कंधे से कंधा मिलाकर विश्व गुरु की राह पर प्रखर गति से पुनर्स्थापित हो चुका है।

आज भारतीय सेना विश्व की दूसरी सबसे बड़ी तथा शक्तिशाली सेना मानी जाती है, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष 2021-22 के अनुसार जीडीपी वृद्धि दर 13.5 फ़ीसदी रहा, जिसके मुताबिक भारत अब दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अंतराष्ट्रीय अनुसंधान में भी भारत किसी से पीछे नहीं है। चौबीस सितंबर 2014 को भारत द्वारा प्रथम प्रयास में मंगलयान का सिर्फ 450 करोड़ में साकार कर दिखाना, पहली मानव युक्त अंतरिक्ष उड़ान परियोजना में काम करना, देश का पहला प्राइवेट रॉकेट बनाना, सुदूर संवेदन में कई नई उपलब्धियां हासिल करना, भारत की शक्तियों एवं क्षमताओं को दर्शाता हैं।

'कोविड-19 महामारी' को भी भारत ने एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया, आज सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पूरे विश्व में वैक्सीन उत्पादन के सर्वश्रेष्ठ उत्पादकों में गिना जा रहा है, साथ ही, 170 देशों में अपनी वैक्सीन का निर्यात कर रहा है। इसके अलावा विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान के अंतर्गत, राष्ट्र ने अब तक करीब 30 करोड़ कोविड वैक्सीन देश की जनता को देकर रिकॉर्ड कायम किया है। 370 और 34 ए को हटाना, जनसंख्या नियंत्रण करना, भारत की जनता को उच्च दर्जे का अन्न प्रदान करना, पूरे विश्व में अनेकता में एकता का उदाहरण देना, यह सभी कुछ भारत को विश्व पट्टल पर एक उच्च स्थान दिलाता है।

भारत का विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, पुराण, वनस्पति, लोकतंत्र, सेना, चिकित्सा, अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान, आदि सभी विश्व के लिए किसी ख़ज़ाने से कम नहीं है। आज अमेरिका ने स्वीकार किया है कि तुलसी और पीपल सर्वोत्तम है, चीन ने मान लिया है कि दाह-संस्कार ही सर्वोत्तम विधि है, इजरायल ने माना कि हवन और यज्ञ से विषाणु दूर होते हैं, फ्रांस ने माना कि शंख ध्वनि बहुत लाभदायक है, संपूर्ण विश्व ने माना कि नमस्ते ही सर्वोत्तम है। यह सब इसी बात को दर्शाते हैं कि भारत विश्व गुरु बनने की कर्तव्य पथ पर द्रुतगति से अग्रसर है, यह विश्व, भारत कि धरोहर से सीख ले रहा है, इसके तौर-तारीकों को अपना रहा है। और भारत अपने आदर्शों को साथ लिए, विश्व को उन्नति का मार्ग दिखला रहा है।

दुनिया का इतिहास पूछता रोम कहां यूनान कहां है
घर घर में शुभ अग्नि जलाता वह उन्नत ईरान कहां है
दीप बुझे पश्चिमी गगन के, व्याप्त हुआ बर्बर अंधियारा
किंतु चीर कर तम की छाती चमका हिंदुस्तान हमारा।

- श्रेया गोस्वामी
कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीयकरण

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल"
-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

मानव धरती पर एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी बात को व्यक्त करने के लिए शब्दों का सहारा लेता है, और यह शब्द एक समूह का रूप लेकर एक वाक्य की रचना करते हैं, फिर यही वाक्य स्वयं में एक भावार्थ लिए विचारों का आदान प्रदान कर भाषा रूपी संवाद तंत्र की रचना करते हैं। विश्व विभिन्न संस्कृतियों,धर्मों और व्यवस्थाओं से परिपूर्ण है, और प्रत्येक संस्कृति और सभ्यता की अपनी एक विशेष भाषा होती है जो समय के साथ- साथ विकसित होती है। ऐसे ही विकसित हुई है, विश्व की चौथी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा 'हिंदी ', जिसकी उत्पत्ति वैदिक कालीन भाषा, 'संस्कृत' से हुई और कालचक्र के कई आवर्तन पूरे करने के बाद उसने यह रुप लिया। इसके हर लिखित शब्द का उच्चारण विशिष्ट होता है, जो इसे वैज्ञानिक भाषा का दर्जा देने में सक्षम सिद्ध करता है ।

आज भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, दक्षिण अफ्रीका, बहरीन, कुवैत, ओमन, कतर , सऊदी अरब गणराज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस, आस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी सीखने वाले और बोलने वालो की गिनती बढ़ती चली जा रही है। विदेशों में मारीशस, फीजी और सूरीनाम जैसे देशों से हिन्दी की अनेक पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है। फीजी के संविधान में तो संसद में हिन्दी के प्रयोग का भी प्रावधान किया गया है और मारीशस के लोग तो हिन्दी को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं, यही कारण है कि आज मारीशस के सर्वश्री अभिमन्यु, अनत सोमदत्त बखौरी और दूसरे लेखक, कवि, कथाकार अत्यंत लोकप्रिय हैं और उनकी रचनाएँ भारत की पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपती है। वर्ष 2019 में अरब देश ' संयुक्त अरब अमिरात ' ने न्याय प्रणाली में सुधार लाने के प्रयास में अरबी और अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को भी तीसरी आधिकारिक अदालत की भाषा के रूप में भी शामिल किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कई संस्थाएँ हैं जो हिंदी के प्रसार एवं प्रचार में जूटी हुई हैं। हिंदी की प्रसिद्धि तो विश्व ने तब ही देख ली थी जब पहली बार नागपुर में दस जनवरी सन् 1975 में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ था।

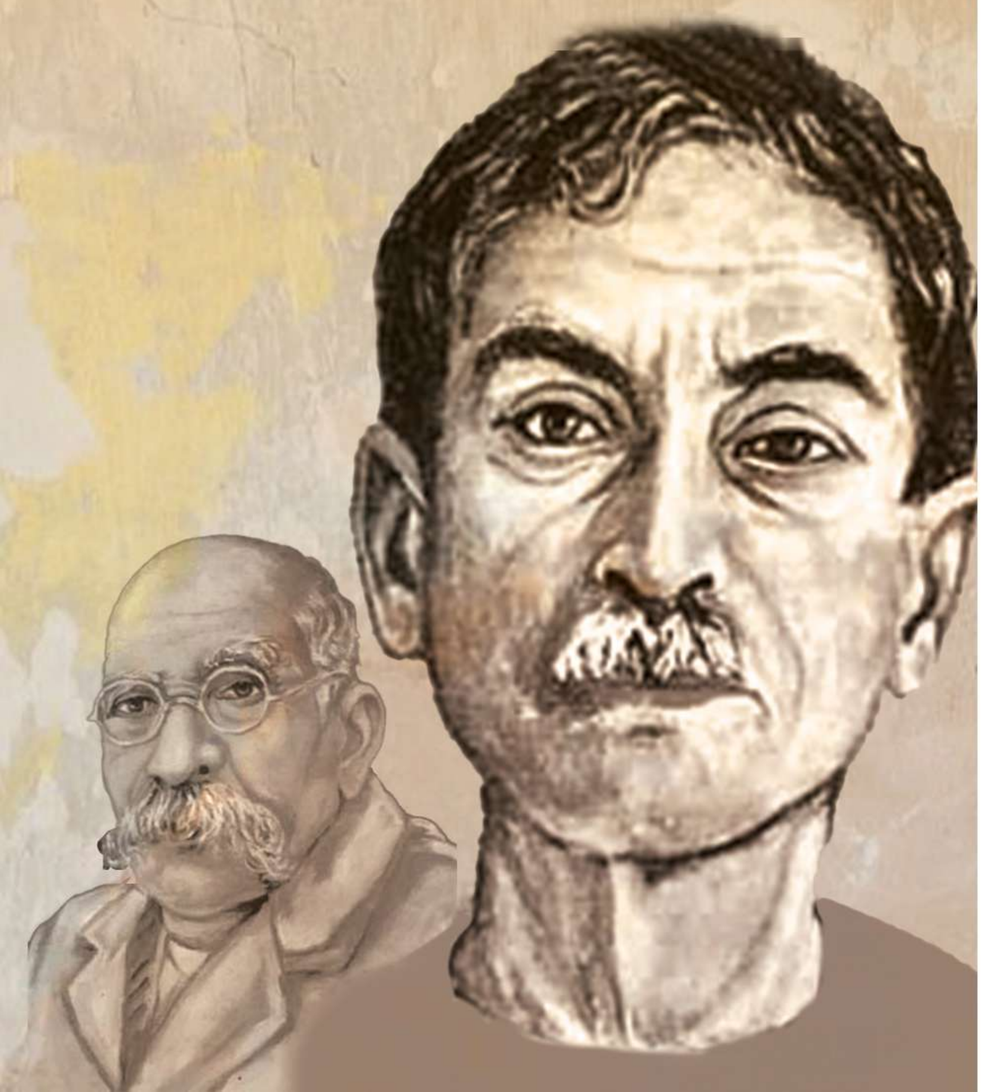

इस सम्मेलन में विश्व के तीस देशों से अनेक विद्वान एवं प्राध्यापक आये, तब वहां यह देखा गया की अनेक देशों से आये लोग किस प्रकार धारा-प्रवाह हिन्दी में भाषण कर रहे थे। विदेशियों को भी इस बात की प्रसन्नता थी कि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर वे अपने विचारों का आदान-प्रदान इस भाषा के माध्यम से कुशलतापूर्वक कर रहे थे। इस सम्मेलन ने हिन्दी के प्रति जो कुछ शंकाएँ लोगों के मन में थीं, उन्हें दूर किया और पहली बार उसी मंच से यह सिद्ध हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए हिन्दी एक सर्वथा सशक्त एवं सक्षम भाषा है। उस सम्मेलन से हिन्दी की गौरववृद्धि के साथ-साथ एक विश्व हिन्दी परिवार की कल्पना साकार हुई और पहली बार एक विपुल जन-समुदाय ने यह महसूस किया कि हिन्दी के विकास तथा प्रचार की संभावनाएँ अपार हैं। अपितु इस दिन की महत्ता को याद करने हेतू भारत सरकार ने दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस घोषित किया, तब से लेकर आज तक ऐसे कई सम्मलेन भारत एवं विश्व में निरंतर किये जा रहे हैं।

"मैं भारत की जनता की ओर से राष्ट्रसंघ के लिए शुभकामनाओं का संदेश लाया हूं।"

यह कुछ शब्द हैं भारत माता के उस वरद पुत्र के जिसने हिंदी भाषा को विश्व पटल पर ऐसे प्रस्तुत कर दिखाया की संयुक्त राष्ट्र की महासभा तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो गई। 4 अक्टूबर 1977 वह ऐतिहासिक दिन था जब संयुक्त राष्ट्र में हिंदी मैं भाषण देकर अटल बिहारी वाजपेयी ने इतिहास रचा था। उनकी मातृभाषा हिंदी थी और उन्होंने वैश्विक मंच पर हिंदी में भाषण देने में तनिक भी झिझक महसूस नहीं की। वैसे पहले उनका भाषण अंग्रेजी में लिखा गया था मगर वाजपेयी ने बड़े ही गर्व के साथ इस भाषण का हिंदी अनुवाद पढ़ा और समूचे विश्व को हिंदी के रंग में रंग दिया था। समय के साथ हुए तकनीकी विकास एवं नवीनीकरण ने विश्व के कई देशों को हिंदी की ओर अपना झुकाव बढ़ाने एवं इस भाषा की सुंदरता से परिचित होने को प्रेरित किया। इजरायल के विदेश मंत्रालय में डिजिटल डिप्लोमेसी ब्यूरो के प्रमुख राजदूत डेविड सारंगा ने इस वर्ष जनवरी के महीने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से हिंदी में भाषण दिया। इजराइली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नवाचार की मदद से हिंदी में परिवर्तित किए गए वीडियो में डेविड सारंगा ने कहा था की वे हमेशा से लोगों से हिंदी भाषा में संवाद करना चाहते थे, लेकिन नवाचार की सहायता से वे इस कार्य में सफल हो पाए थे।

यह तो सुनिश्चित ही है, कि हिंदी भाषा की सरलता, मधुरता, और इतिहास ने इसे आज एक अंतराष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया है जिसकी लोकप्रियता अतुलनीय है, इसकी उपलब्धियों ने यह सिद्ध किया हैं की यह भविष्य की आधुनिक भाषा है, इसलिए हम चाहे विश्व के किसी भी कोने में चले जाएं, हिंदी जानने, सुनने या बोलने वाला व्यक्ति अवश्य मिल ही जाता है। भारत की बढ़ते वैश्विक भागीदारी निश्चित ही हिन्दी को अंतराष्ट्रीय मंचों पर स्थापित करने मे सफल होगी।

- शिक्षा रावत
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

धारणीय विकास पर्यावरण और भारतीय सभ्यता का सामंजस्य

पर्यावरण को समस्त भूमंडलीय विरासत और सभी संसाधनों की समग्रता के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें वे सभी जैविक व अजैविक तत्व आते हैं जो एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। धारणीय विकास का तात्पर्य है- "ऐसा विकास जो भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे।"

विकास के क्रम में 'पर्यावरण' महत्वपूर्ण घटक है। पर्यावरण हमारे निर्धारित कार्यों को बिना किसी व्यवधान के तभी कर सकता है, जब तक कि ये कार्य उसकी 'धारण क्षमता की सीमा' में हो। संसाधनों का निष्कर्षण उनकी पुनर्जनन दर से अधिक नहीं होना चाहिए, ऐसा होने पर पर्यावरण संकट पैदा होता है।

"वनों के हैं तीन उपकार
मिट्टी पानी और बयार"

जैसे-जैसे समय परिवर्तित होने लगा, हम सभी आधुनिकता के पथ पर अग्रसर हो गए। पूर्वजों द्वारा बताए गए मूल व संस्कार हमें अंधविश्वास लगने लगे। तकनीकी युग के पथ पर अग्रसर मनुष्य जाने-अनजाने मे पर्यावरण को क्षति पहुंचाने लगा। परिणामस्वरूप पर्यावरण के सभी घटक असंतुलित एवं प्रदूषित होते जा रहे हैं। अतः मनुष्य पर्यावरण का एक अच्छा संरक्षक सिद्ध होने में असफल रहा। आज मानव व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों स्तरों पर अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता जा रहा है और यही कारण है कि वह प्राचीन सभ्यता एवं जीवन मूल्यों का अच्छा संपोषक सिद्ध नहीं हो सका है। प्रारंभिक दिनों में जो सभ्यता प्रारंभ ही हुई थी या जनसंख्या में इस असाधारण वृद्धि के पूर्व और देश में औद्योगिकरण अपनाने से पूर्व, पर्यावरण संसाधनों की मांग और सेवाएं उनकी पूर्ति से बहुत कम थी, इसलिए पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न नहीं हुई, परंतु अब स्थिति बदल चुकी है, अब हमारे समक्ष पर्यावरण संसाधनों और सेवाओं की मांग अधिक है, लेकिन उनकी पूर्ति सीमित। विकासशील देशों की निरंतर बढ़ती जनसंख्या और विकसित देशों के समृद्ध उपभोग तथा उत्पादन मानकों ने पर्यावरण के कार्यों पर भारी प्रभाव डाला है। अतः बढ़ता जा रहा पर्यावरण संकट मानव के अस्तित्व के लिए भी खतरा है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृति भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को देवतुल्य स्थान दिया गया है। यही कारण है कि पर्यावरण के सभी अंगों; जैसे- जल, वायु, भूमि को देवताओं से जोड़ा गया है। हमारी संस्कृति यह स्पष्ट करती है कि मानव के प्राणों की रक्षा प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा पर निर्भर करती है।

प्रत्येक मनुष्य पृथ्वी का ऋणी है एवं पृथ्वी का संरक्षण उसका दायित्व है। परंतु आज का मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए पृथ्वी को अपना दास समझने लगा है, जो कि किसी भी सभ्यता के लिए पतन की पहली सीढ़ी है। किसी भी सभ्यता के लंबे समय का इतिहास उसके प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने पर ही हो सकता है। पूर्व में भी अपने क्रियाकलापों के कारण मानव सभ्यताएं नष्ट हुई हैं, और आज पुनः यह संसार विनाश के उसी मार्ग पर अग्रसर है। मनुष्य का यह समझ लेना ही उचित होगा कि उसका लाभ स्वयं को प्रकृति के अनुरूप ढाल लेने में है।

प्राचीन काल में यदि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की आवश्यकता भी पड़ती थी, तो ऋषि क्षमा-याचना करते हुए कहते थे- हे पृथ्वी हम जो कुछ भी आपसे ग्रहण कर रहे हैं, वो शीघ्रताशीघ्र प्राकृतिक अवस्था में आ जाए, आज हमें ऐसे प्राचीन संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है।

वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और आकाश– ये सृष्टि के आधारभूत पंचतत्व हैं। अथर्ववेद में 'वायु' को प्राण कहा गया है, 'जल' को आधारभूत बताते हुए, जीव-जगत की आत्मा माना गया है। इसमें 'पृथ्वी' सबसे स्थूल तत्व है, देश में पृथ्वी को माता एवं स्वयं को उनका पुत्र माना गया है, इन तत्वों में 'अग्नि' का भी अपना विशिष्ट महत्व है, इसे विश्व की पहली किरण बताया गया है। 'आकाश' की उत्पत्ति आत्मा से मानी गई है| ऐसा माना जाता है कि हमारी संपूर्ण गति एवं स्थिति आकाश में है और आकाश हमारा आश्रय है।

हमारी भारतीय सभ्यता में वृक्षों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वेदों में वृक्ष वनस्पतियों को जगह -जगह पर नमस्कार किया गया है–

"नमो वृक्षेभ्य: हरिकेशेभ्य:, वनानां पतये नमः, औषधीनां पतये नमः, वृक्षाणां पतये नाम, अरण्यानां पतये नमः।"

वृक्ष-वनस्पतियों की जितनी सुरक्षा हम करेंगे, उससे हजारों गुना लाभ वह हमें प्रदान करेंगे।

अतः मनुष्य की उत्पत्ति जिन पंचतत्वों से मिलकर हुई है, यदि वह प्रकृति के उन्हीं तत्वों को क्षति पहुंचाने का प्रयास करे, तो अप्रत्यक्ष रूप से वह स्वयं के ही विनाश का कारण बन जाता है। इस प्रकार पर्यावरण की रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है कि पर्यावरण की स्वभाविता को यथावत् बनाए रखा जाए|

यदि एक ओर हम स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन की चाह रखते हैं, और दूसरी और पर्यावरण को क्षति पहुंचाते हैं तो हमें कभी इस लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती। यह आवश्यक है कि हम प्रकृति के उपासक होकर समग्र सृष्टि में देवत्त्व की चेतना को मानते हुए पर्यावरण के संरक्षण में अपना अतुलनीय योगदान देने का प्रयास करें। अतः समय रहते ही हमें पर्यावरण के महत्व को समझना होगा, तभी हम 'धारणीय विकास' के लक्ष्य को पूरा करने में सक्षम हो पाएंगे।

- भूमिका कांडपाल

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

अंतर्मन की

भारतीय सांस्कृतिक विरासत-
एक देश, अनेक वेश

एक भाव उनको समर्पित
जिनका अपना अभिधान है।
विश्व सिद्ध वसुधैव कुटुंब की
अपनी संस्कृति महान है॥
अनेक धर्म और परंपराएं
एक सभी का लक्ष्य यहाँ।
एक तरफ़ सम्पूर्ण जगत और
एक तरफ़ ये हिन्दोस्तां॥
साथ निभाना इक दूजे का
सदियों से अपना विधान है।
विश्व सिद्ध वसुधैव कुटुंब की
अपनी संस्कृति महान है॥
भारत क्या? एक भू का अंश?
ये बस झूठा यार प्रपंच।
अनेक धर्म, जाति, मजहब
रंग,रूप वाले हम सब॥
जैसे अलग-अलग फूलों का
सजा हुआ उद्यान है।
विश्व सिद्ध वसुधैव कुटुंब की
अपनी संस्कृति महान है॥
इतिहास विराट इस जग ने देखा
वर्तमान का बुलंद सितारा।
ये बात सकल जग मान चुका है
आने वाला भविष्य हमारा॥
इस सफ़लता का राज कि हमने
किया संस्कृति का सम्मान है।
विश्व सिद्ध वसुधैव कुटुंब की
अपनी संस्कृति महान है॥

- हर्षित पाण्डेय
मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, ततृीय वर्ष

प्रयास

चलो एक नया सपना सजाते हैं, एक प्रयास और कर दिखाते हैं,
मन में बसी उस निराशा को मिटाते है।
माना इन तूफानों में सबके पैर डगमगाते हैं,
मगर जो खड़े रहते हैं, वही सफल हो पाते हैं।
चलो उन बेड़ियों को तोड़, एक नयी उम्मीद जगाते हैं।
चलो एक प्रयास और कर दिखाते हैं।
अकेला नहीं है तू, इस काली अंधेरी रात में,
उठा सर और देख अनेक सितारे हैं तेरे साथ में।
कौन कहता है कि सब तकदीर लिखवा कर आते हैं,
चल खड़ा हो हम किस्मत बदल कर दिखाते हैं।
चलो एक नया सपना सजाते हैं, एक प्रयास और कर दिखाते हैं।
चलते-चलते इन राहों में अनेक छाले पड़ जाते हैं,
यदि विष हैं तकलीफें, तो इस विष को पी जाते हैं।
क्योकि जो विष पी पाते हैं वही तो शिव कहलाते हैं।
हर ओर फैले इस अंधकार को अपने तेज से मिटाते हैं,
चलो एक नया सपना सजाते हैं, एक प्रयास और कर दिखाते हैं।

दिन रात बहाए अश्रु तूने, अब पसीना बहाते हैं।
सुना है तेरी हुँकार से पर्वत भी काँप जाते हैं,
आ चल चुनोतियाँ से नजरें मिलाते हैं,
तुझमें पनप रही उस चिंगारी को ज्वाला बनाते हैं,
चलो एक नया सपना सजाते हैं, एक प्रयास और कर दिखाते हैं।

- रजनीश पाण्डेय
कर्षि महाविद्यालय, चतुर्थ वर्ष

कलम से

स्वर्णिम भारत

पिरो रही हूँ प्राचीन पृष्ठों को
पौराणिक वृतांत के तागे में
लगाई है गाँठ तथ्यों की,
ढाला है स्वर्णिम सांचे में।
मेहरगढ़ से करें प्रारंभ
हुआ आगमन आर्यों का
लाए संस्कृति एवं सनातन
किया प्रवाह विचारों का
नीर सरस्वती के आँचल में पनपी
युलिथ व हड़प्पा
चित्त- बुद्धी विकास कहलाई रेडियन सभ्यता।
पाषाण से पोषण जनमा, कृषि से खुशहाली आई
फिर ताम्रयुग (तांबा) की विजनौत ने विरासत पाई
दी दस्तक 6वीं सदी ने
गूंजा जैन- बुद्ध ज्ञान संचार,
उत्तर में अशोक तथा दक्षिण में चोल ने धवज् लहराया
हुआ अखंड भारत का विस्तार।
शंखनाद था 8वीं सदी का
इस्लाम-अरब जो आयें हैं
बारहवी सदी के चलते- चलते पंख अपने फहराये हैं
उफान से बाबर आये, वंशों ने धार्मिक सहिष्णुता विख्याये,
वीर शिवजी कर रहे नेतृत्व हुए मराठा शक्तिशाली अंग्रेजो ने मारी बाजी
वीर ना थे झुकने को राज़ी,
1947 सौग़ात थी, बेड़ियाँ सब तुड़वाई ज्यों
चला 21वीं सताब्दी का भावी विश्वगुरु, स्वर्णिम गाथा रचने को।

- प्रियंका कार्की
कर्षि महाविद्यालय,ततृीय वर्ष

आज़ादी विचारों की

आज भूल जाओ वो बातें,
जो दुनिया वाले कहते हैं।
आज विचारों को फिर से...
आज़ाद घूमने देते हैं॥
वो पहाड़ जिस पर चढ़कर तुम,
गूंज अपनी ही सुनना चाहते हो।
वो पेड़ जिसके नीचे तुम,
असीम शांति पाते हो॥
वो दौड़, जिसमें सब तुमसे,
बहुत आगे निकल गए।
वो तपन, जिसमे तप करके,
बाकी सारे पिघल गए॥
आज विचारों को स्वच्छंद कर,
उसी पर्वत पर चढ़ने दो।
उसी पेड़ के नीचे आज,
सुकून की सांसे भरने दो॥
आज मत रोको विचारों को,
उसी दौड़ का हिस्सा बनने दो।
उसी तपन की तपिश से,
विचारों को संवरने दो।
इन विचारों को कैद कर,
आत्म-संदेह क्यों करते हो?
कैसे मिलेगा लक्ष्य तुम्हें जब,
तुम चलने से डरते हो।
मंज़िल वही पाते हैं जो,
विचार दृढ़ कर लेते हैं।
तो, आज विचारों को फिर से,
आज़ाद घूमने देते है॥

पल्लवी शर्मा
कृषि महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

विलक्षण खगोलीय पद्धति- भारतीय पंचांग

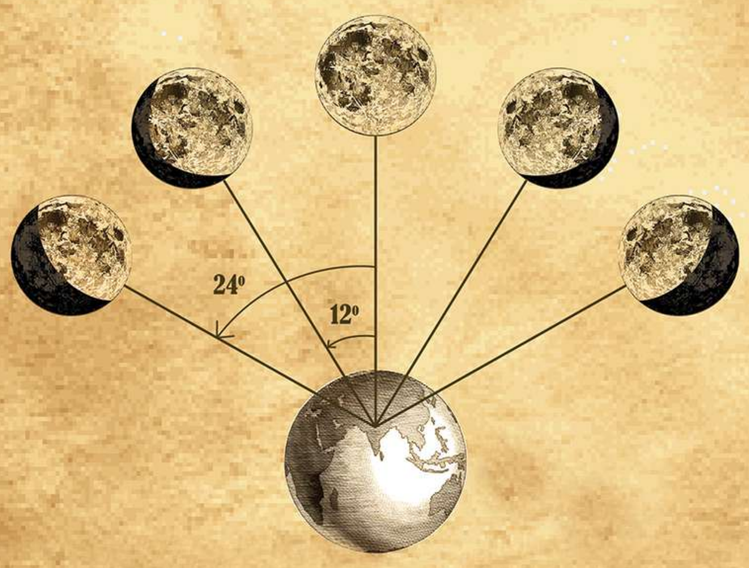

भारतीय संस्कृति में अनेकों रीति-रिवाज एंव मान्यताएं हैं, और इनके पीछे वैज्ञानिक औचित्य की दृढ़ नींव भी है, जो भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर सुदृढ़ करती है। वेदों एंव उपन्यासों के अध्ययन में समाए ज्ञान रूपी सागर में हमें यूं तो बहुत से ऐसे तथ्य देखने को मिलते हैं जिनके सामने आज की आधुनिकता क्षीण होती प्रतीत होती है, परंतु हम समझने जा रहे हैं भारतीय संस्कृति के उस पहलू को जो शेष सभी गतिविधियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आधार है, और यह है भारतीय पंचांग।

आज के समय में अधिकांश लोग सोचते हैं की भारतीय पंचांग केवल काल्पनिक तथ्यों एंव विचारों पर आधारित एक पंचांग है जो केवल भारत के त्योहारों एंव अन्य मंगल तिथियों का अनुमान लगाने के लिए है। परंतु सत्य यह है कि भारतीय पंचांग को स्थापित करने वाली वैज्ञानिक जड़ें इतनी जटल एंव सूक्ष्म है की आज भी अनेक खगोलशास्त्री इसे सम्पूर्ण रूप से समझने में असक्षम हैं।

पंचांग शब्द का निर्माण दो संस्कृत शब्दों से हुआ है, 'पंच' एंव 'अंग' अर्थात् पाँच अंग और यह पाँच अंग हैं- तिथि, वार, नक्षत्र, योग, एंव कर्ण। यूं तो भारतीय इतिहास में भिन्न भिन्न प्रांतों के अनुसार अनेकों प्रकार के पंचांग उपयोग में लिए जाते हैं, उदाहरण के रूप में बुद्ध संवत्, महावीर संवत्, हिजरी संवत्, सिख संवत्, ईरानी संवत् इतियादी। किन्तु इन सब में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, विक्रम संवत्। मान्यता है की विक्रम संवत् का प्रचलन ५७ ई.पू. में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा किया गया जिसका उपयोग आज न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण संसार में किया जाता है, यहाँ तक की नेपाल में तो इसका उपयोग सभी औपचारिक कार्यों हेतु किया जाता है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर जिसका उपयोग आज आमतौर पर किया जाता है, विक्रम संवत् से ५७ वर्ष पीछे है (इस वर्ष हम भारतीय पंचांग के अनुसार विक्रम संवत् २०८० में प्रवेश कर रहे हैं)।

विक्रम संवत् में चंद्र माहः एंव नक्षत्र वर्ष का प्रयोग होता है, और इसके एक वर्ष में ३५४ दिवस होते हैं। विक्रम संवत् में प्रतेक वर्ष में १२ माहः होते है, जो की १२ नक्षत्रों के नाम के आधार पर कुछ इस प्रकार हैं- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन। प्रतेक माहः में दो १५ दिवसीय पक्ष होते हैं, कृष्ण पक्ष (वैध पक्ष) एंव शुल्क पक्ष (गौरा पक्ष), कृष्ण पक्ष यानि पूर्णिमा से अमावस्या के मध्य एंव शुक्ल पक्ष यानि अमावस्या से पूर्णिमा के मध्य का कालखंड। नीमच पंचांग के अनुसार माहः की शुरुआत कृष्ण पक्ष से एंव गुजरात पंचांग के अनुसार माहः की शुरुआत शुक्ल पक्ष से की जाती है।

प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं, जो इस प्रकार हैं- प्रतिपदा, द्वादशी, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदश, चतुर्दशी, पूर्णिमा या अमावास्या। कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि अमावास्या एंव शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि पूर्णिमा है। एक तिथि समाप्त होती है और दूसरी तब शुरू होती है जब सूर्य और चंद्रमा के बीच की कोणीय दूरी १२० का अभिन्न गुणक हो जाती है।

चूंकि एक सौर वर्ष ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल, ५७ विपल का होता है, परंतु एक चंद्र वर्ष केवल ३५४ दिन, २२ घड़ी, १ पल, २३ विपल का ही होता है, चंद्र माहः सौर संक्रमण से कुछ समय पहले ही पूर्ण हो जाता है। लगभग ३० माहः के कालखंड में यह अंतर इतना हो जाता है की चंद्र माहः की तुलना में सौर संक्रमण एक राशि पीछे छूट जाता है, इस अंतर में समानता लाने के लिए प्रतेक ३ वर्षों में एक अधिक माहः जोड़ दिया जाता है।

आश्चर्य की बात है की जिस समय आज की भांति कोई आधुनिक उपकर्ण उपलब्ध न थे उस समय भी भारतीय खगोलशास्त्री ग्रहों एंव नक्षत्रों इतियादी का इतना जटल, सूक्ष्म एंव सटीक आंकलन करने में सक्षम थे। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में भिन्न भिन्न प्रथाओं के पीछे वैज्ञानिक औचित्यों का ज्ञान स्वरूपी भंडारण है, आवश्यकता है तो केवल इससे जानने की, इसे समझने की।

- विकास कुमार
कृषि महाविद्यालय, द्वितीय वर्ष

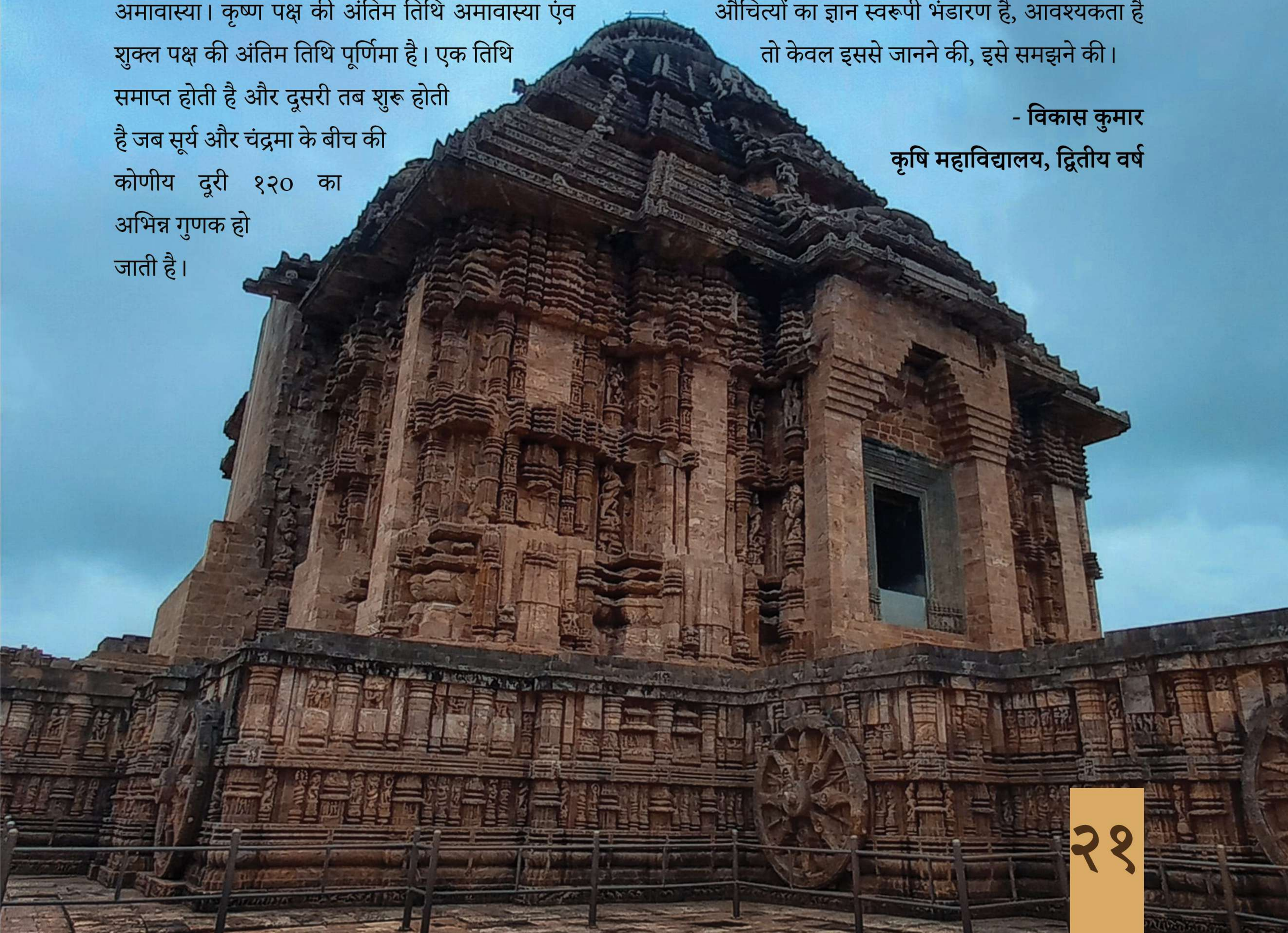

भारतीय संस्कृति- समकालीन स्वरूप पर मध्यकालीन प्रभाव

"हिमालयं समारभ्य यावत इंदु सरोवरम।
तं देवनिर्मित देश हिंदुस्तान प्रचक्षते ॥"

अर्थात् विशाल पर्वत हिमालय से प्रारंभ होकर हिंदू महासागर तक विस्तृत यह ईश्वर निर्मित देश हमारा हिन्दुस्तान कहलाता है।

भारत – यह मात्र एक भौगोलिक इकाई नहीं, अपितु एक जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। और इस राष्ट्रपुरुष की चेतना बसती है इसकी सहस्त्रों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक विरासत में। भारतीय संस्कृति की कुछ ऐसे विशेषताएं हैं जो विश्व के अन्य देशों की संस्कृति में दृष्टिगत नहीं होती जिसका कारण भारत की भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियां हैं ! धर्म, अध्यात्म ,साहित्य एवं ललित कलाओं जैसे विशिष्ट तत्वों के कारण इस सभ्यता ने विश्व में अपनी महत्ता को बनाए रखा है! इस सभ्यता में प्रवाह है एक ऐसी विचारधारा का जो जीवन व्यापन की प्रणाली से परिचित करवाती है।

मध्य काल से लेकर आधुनिक दौर तक भारतवर्ष ने अनेकों आक्रमण देखे , अनेकों सभ्यताएं आती-जाती देखी - इन सभी का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। लेकिन चाहे आक्रांताओ की बात हो या भारत में बसने वाले विदेशी समुदायों की, राष्ट्र ने सदा ही अपने मूल अस्तित्व की रक्षा करते हुए सभी के लिए अपने द्वार खुले रखे। मध्य एवं पश्चिमी एशियाई आक्रांताओं के प्रवेश ने हमारी संस्कृति के कई पहलुओं पर प्रभाव डाला।

मध्यकाल में जब सत्ता चौहान वंश से खिलजी वंश के पास आई तो समाज पर कई प्रभाव पड़े। जिस भारतवर्ष ने पारिवारिक आदर्शों का सबसे बड़ा प्रतीक रामायण को अनुभव किया था उसी भारत ने अब सत्ता की लालच में संबंधियों को एक दूसरे का वध करते हुए भी देखा। मुगलो, सैयदो, लोदियो ने भी अपने-अपने राज्य में शिल्पकलाओ, मूर्तिकलाओ आदि ललित कलाओ का प्रसार एवं निर्माण किया | इसी काल के दौरान भारत में भक्ति आंदोलन भी प्रचलित हुआ जिसमें भारतीय समाज को मीराबाई, कबीर, गुरु नानक देव जी, सूरदास, तुलसीदास जैसे महान व्यक्ति मिले। कई सारे युग आये और गये लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वो हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके।

साथ ही पुर्तगाली पुजारी ने अकबर के दरबार में यूरोपीय चित्रकला की शुरुआत की। चित्रकला के इस रूप में वर्तमान विचारों और पश्चिमी भारत की पूर्व परंपराओं और मुगल चित्रों की विभिन्न शैलियों के साथ चित्रकला के जैन स्कूल का संयोजन शामिल है।

इन विद्यालयों ने चित्रकला की राजस्थान शैलियों को बनाए रखा और इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
इसके साथ ही संगीत मुगल शासन के दौरान हिंदू-मुस्लिम एकता का एकमात्र और एकमात्र मध्यस्थ साबित हुआ। अकबर ग्वालियर के तानसेन को अपने दरबार में संरक्षण देता था। तानसेन एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें कई नई धुनों और रागों की रचना करने का श्रेय दिया जाता है।
मध्यकालीन भारत के ऐसे ही अनेकों वृतांत एवं घटनाओं ने समकालीन भारत पर प्रभाव तो डाला ही, साथ ही में कुछ ऐसे परिवर्तन भी किए जो अब हमारी संस्कृति एवं रहन सहन का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं।
भारतीय जनसामान्य की बोली अथवा भाषाओं की बात करें तो यह कहना गलत नहीं होगा की मध्यकाल में आए आक्रांताओं द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा ने अधिकतर भारत के संवाद के माध्यम को बदल कर रख दिया। जहां तेरहवीं शताब्दी से पूर्व उत्तर भारत एवं इससे सटे हुए क्षेत्रों में अपभ्रंश का प्रचलन अधिक हुआ करता था, वही गुलाम वंश से लेकर मुगल राजाओं तक के राज में खड़ीबोली एवं ब्रजभाषा जैसी कई बोलियों के साथ अरबी – फारसी प्रभाव का मिश्रण हुआ, और इस मिश्रण ने हिंदुस्तानी भाषा को जन्म दिया। जहां पूर्व में दैनिक जीवन में बोली जाने वाली भारतीय भाषाओं (विशेषकर उत्तर, पश्चिम और मध्य) में अधिकतर शब्द संस्कृत या प्रकृत मूल के होते थे, वहीं आज हमारी अधिकतर जनसंख्या द्वारा एक मिश्रित शब्द भंडार को अधिक प्रयोग में लाने का प्रचलन है।भाषा के साथ ही देश के समृद्ध खान पान की पाक विधि एवं संबंधित पहलुओं ने भी अपने मूल स्वरूप में विशेष परिवर्तन देखा और अपने समकालीन स्वरूप को धारण किया।

भारत के खाद्य इतिहास की शुरुआत, विशेष रूप से वैदिक काल के दौरान, गुणवत्ता का वर्णन करने वाली एक भारतीय दार्शनिक अवधारणा गुण की गुणकारी संपत्ति से प्रेरित थी।
माना जाता है कि सत्त्व, रजस और तम, तीन गुण, 'शाकाहारी, मसालेदार और मांसाहारी' के रूप में प्रकट होते हैं। यहां तक कि अहिंसा के दर्शन ने भी प्राचीन हिंदू सभ्यताओं में लोगों के भोजन विकल्पों को आकार दिया। यह दार्शनिक परंपरा परिवर्तनों की एक श्रृंखला से गुज़री, जिसे भू-राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों द्वारा चुनौती दी गई, जो मुगल आक्रमण के साथ भारत में आए। मध्यकाल से समकालीन भारत की ओर देखें तो मांस एवं उससे जुड़े मसलों एवं तेल की लंबी एवं जटिल मिश्रण प्रक्रिया अब भारत के कई क्षेत्रों के खान पान का हिस्सा बन चुकी है। यूं तो भारत में दुग्ध पधार्थों का सेवन पहले से ही प्रचलन में था, पर पनीर और उससे जुड़ी पाक विधियां मध्यकाल के समय बहुत प्रचिलित हुई जो आज भी जनसामान्य के बहुत बड़े हिस्से द्वारा पसंद की जाती हैं। दम पाक विधि एवं कबाब जैसे बदलाव भी अब उत्तर भारतीय संस्कृति का एक अहम हिस्सा बन चुके हैं।
आदिकाल से अजस्त्र प्रवाहित भारतीय संस्कृति ने विदेशी आक्रान्ताओं से पददलित होने पर भी उनकी उपयोगी और ग्राह्य सभ्यता एवं तत्त्वों को ग्रहण करने के बावजूद अपनी प्राचीन संस्कृति , अपने मूल रूप को यथावत बनाये रखा है । यही कारण है कि भारत आज भी अपनी संस्कृति और सभ्यता में धनी है ।

- प्रज्ञा जैन
प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

भारतीय दर्शन के मनीषी दार्शनिक

"**इंडिया** दैट इज भारत..." अनुच्छेद१(१), भारतीय संविधान में हमारे देश का ज़िक्र कुछ इस प्रकार है। भारत ने पराधीनता बहुत झेली किंतु जिस प्रकार एक माँ हर परिस्थिति में अपने बच्चे को संभाल लेती है उसी प्रकार भारत माँ ने अपनी संस्कृति, अपना विज्ञान, अपना साहित्य, अपना इतिहास को संभाल कर रखा। जग विदित है कि दर्शन का श्री गणेश भारत से हुआ।

पश्चिम में पहला दार्शनिक 'थेल्स' को माना जाता है जो ६ ईसा पूर्व में हुआ। वेद १५०० ईसा पूर्व से ज्ञान गंगा बने हुए हैं। जब पश्चिम में दर्शन की बुनियाद डल रही थी तबतक हम अपना महल खड़ा कर चुके थे। टी एस एलियट ने भारतीय दार्शनिको के बारे में कुछ इस प्रकार अपना मत दिया है-"भारतीय दार्शनिकों की सूक्ष्मताओं को देखते हुए यूरोप के अधिकांश महान दार्शनिक स्कूल के बच्चों जैसे लगते हैं।"

वेदव्यास का नाम सबने सुना है किंतु विवेकानंद के अनुसार यह किसी व्यक्ति विशेष का नाम नही था अपितु बहुत से विद्वान थे जिन्हें वेदव्यास कह कर पुकारा जाता था। माना जाता है कि इन्होंने वेदों का संकलन किया, १८ पुराणों की रचना की, गीता लिखी व वेदांत दर्शन की प्रमुख पुस्तक ब्रह्मसूत्र भी इन्होंने ही लिखी (मान्यताओं के अनुसार ऋषि बादरायण और वेदव्यास एक ही थे।)

भारतीय दर्शन की नौ शाखायें मानी जाती हैं जिनमें छः आस्तिक दर्शन (सांख्य-योग, न्याय- वैशेषिक, मीमांसा-वेदांत) हैं। इन्हें ही सनातन, हिन्दू व षट दर्शन कहा जाता है। शेष तीन नास्तिक दर्शन (चार्वाक, बौद्ध व जैन) हैं। ध्यानयोग्य तथ्य यह है कि यहाँ आस्तिक या नास्तिक का संबंध ईश्वर से नही अपितु वेदों से है। "नास्तिको इति वेद निंदकः।" बहुत से लोग मानते हैं कि उपरोक्त दर्शन कुछ विद्वानों ने शुरू किये किंतु यह धारणा गलत है। विद्वानों ने पहले से विद्यमान इन दर्शनों के सूत्र लिखे उदाहरणतः पतंजलि का योग सूत्र, जैमिनी का मीमाँसा सूत्र आदि। अधिकतर भारतीय वेदांत दर्शन को मानते हैं। वेदांत की दो शाखायें हैं- अद्वैत वेदांत व वैष्णव वेदांत।

कुछ भारतीय मनीषी दार्शनिकों के दर्शन का अनुयान निम्नलिखित है;

शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत पर बहुत बल दिया व ज्ञान मार्ग को चुना व भक्ति मार्ग को अछूता छोड़ दिया। महायानी नागार्जुन का माध्यमिक शून्यवाद भी कुछ अद्वैत वेदांत से मेल खाता है।

वैष्णव वेदांत के कई अनुयायी व प्रवर्तक रहे और आज भी यह हर जगह है क्योंकि यह भक्ति मार्ग पर बल देता है। रामानुज आचार्य जिन्होंने विशिष्ट अद्वैतवाद की धारणा दी, जिनके शिष्य रहे रामानंद व रामानंद के शिष्य हुए कबीरदास।

वल्लभाचार्य जिनका दर्शन रहा शुद्ध द्वैतावाद, जिनके शिष्य हुए सूरदास। द्वैताद्वैतवाद के प्रवर्तक रहे निम्बुक आचार्य तथा चैतन्य महाप्रभु ने अचिन्त्य द्वैताद्वैतवाद का प्रसार किया। पन्द्रवीं शताब्दी में एक नई विचारधारा को गुरुनानक ने जन्म दिया जिसे हम सिख समाज कहते हैं।

उन्नीसवीं व बीसवीं सदी की बात की जाये तो राजा राम मोहन राय का उल्लेख नही भूलना चाहिये जिन्होंने बृह्मोसमाज की स्थापना की जिसमें उनका साथ दिया देवेंद्र नाथ टैगोर तथा केशव चन्द्र सेन ने। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस से ज्ञान लेकर उसे विश्व में प्रसारित किया। महर्षि अरविंद ने एकीकृत योग का दर्शन दिया। महात्मा गाँधी वैष्णव वेदांत के प्रमुख अनुयायी थे। डॉ सर्वप्पली राधाकृष्णन का दर्शन में योगदान सहरानीय है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। डॉ आंबेडकर ने १९५६ के आसपास बौद्ध दर्शन की एक नई शाखा का निर्माण किया जिसे नाम दिया गया नवयान। जे कृष्णमूर्ति व ओशो रजनीश आदि कुछ आधुनिक युग के दार्शनिक हैं।

प्रसिद्ध कवि मैथिली शरण गुप्त अपनी पुस्तक भारत भारती में कुछ इसी प्रकार लिखते हैं कि -

"समझा प्रथम किसने जगत में गूढ़ सृष्टि-महत्त्व को ?
जाना कहो किसने प्रथम जीवन-मरण के तत्त्व को ?
आभास ईश्वर-जीव का कैवल्य तक किसने दिया ?
सुन लो, प्रतिध्वनि हो रही, यह कार्य्य आर्य्यों ने किया॥

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी.."

भारतीय दर्शन हमें प्रश्न करना भी सिखाता है व उत्तर खोजना भी।

- " कस्मै देवाय हविषा विधेम "

(किस देव की पूजा की जाय ?)

- "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥"
(जिसे लोग इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं, वह सत्ता केवल एक ही है, ऋषि लोग उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं।)

भारत सभी प्रश्नों का उत्तर है किंतु समस्या यह है कि बहुत से लोग नही जानते और और बढ़ी समस्या यह है कि लोग यह भी नही जानते कि वो नही जानते।

- गौरव उपाध्याय

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, तृतीय वर्ष

इतिहास स्वयं इस बात का साक्षी है। विश्व में सभी आत्मा-उन्नत विचारों और ज्ञान की विभिन्न शाखाओं की जड़ें भारत में विद्यमान हैं।

- स्वामी विवेकानंद

भारतीय वेदान्त दर्शन

भारतीय दर्शन की आस्तिक धारा में से एक प्रमुख धारा है "वेदांत दर्शन"। वेदांत दर्शन ब्रह्म प्राप्ति के लिए की गई ज्ञान निष्ठा वाली साधना का अग्रगण्य पथ है। इस पथ का प्रारंभिक बिन्दु उपनिषद है जो वेद ग्रंथ और वैदिक साहित्य का सार समझा जाता है। वेदांत भारतीय दर्शन का छठा व अंतिम दर्शन है। वेदांत की सबसे मुख्य शाखाओं में विपुल माने जाने वाली शाखा अद्वैत वेदांत, विशिष्ट अद्वैत वेदांत और द्वैत वेदांत के प्रवर्तक आदि शंकराचार्य , रामानुजाचार्य , मध्वाचार्य को माना जाता है। विशिष्ट अद्वैत वेदांत आचार्य रामानुजन का प्रतिपादित किया हुआ, एक दर्शन मत हैI विशिष्ट अद्वैत वेदांत के अनुरूप जगत और जीवात्मा दोनों ब्रह्म से भिन्न है, लेकिन उनका मत है कि इसका उदगम स्वयं ब्रह्म है। उसमें ठीक उसी प्रकार का संबंध है, जैसा किरणों का सूर्य से है अंततः ब्रह्म एक होने पर भी अनेक है।

श्री इलया पेरुमल ने बौद्धिक आधार पर शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत को कड़ी चुनौति दी और विशिष्ट अद्वैतवाद का प्रतिपदान किया। आदि शंकराचार्य के अनुसार केवल इकलौते ब्रह्म या ईश्वर का अस्तित्व विराजमान है। परन्तु रामानुजन के बौद्धिक ज्ञान के अनुरूप ब्रह्म इकलौते नहीं ब्लकि ब्रह्मा के साथ-साथ उनके अनेक प्रत्यक्षीकरण स्वरूप भी उपस्थित हैं। एक और जहां अद्वैतवाद दर्शन का सिद्धांत कहता है कि मोक्ष और मुक्ति के विलय का रास्ता ब्रह्म या ईश्वर पर परिपूर्ण हो जाता है परंतु दूसरी ओर आत्मा का सांस्कारिक बंधनों से मुक्त होने का सूर्य (ईश्वर निवास स्थान) मैं जाकर अस्त हो जाता है। यह विशिष्ट अद्वैतवाद के सिद्धांत के अनुरूप रामानुजन कहते हैं। आचार्य के दर्शनिक मत में सत्त या परमसत् और सृष्टि के सर्जन को त्रिस्तरीय माना गया है। प्रथम स्तर को ब्रह्म अर्थात् ईश्वर, द्वितीय स्तर को चित अर्थ आत्म तत्व, और तृतीय स्तर को अचित अर्थ प्रकृति तत्व माना गया है। यह त्रि-स्तर मिलकर ही सृष्टि का सृजन करते है। और उसको गतिमान बनाते हैं। रामानुजन के दर्शन का नजरिया किसी भी चित् , अर्थात् तत्व के और अचित् अर्थात् प्राकृतिक तत्व किसी भी रूप को ब्रह्म या ईश्वर का विशिष्ट स्वरूप माने पर जोर देता है, और इनका कार्यान्वयन भी ईश्वर पर ही आधारित हैं। उनके प्रत्यक्ष ज्ञान के अनुरूप आत्मा एंव प्रकृति तत्व {तनु व देह} का पृथक्करण असंभव है क्योंकि वह ब्रह्म या ईश्वर का शरीर है। ब्रह्म उनको गतिमान रखने मे सहायता प्रदान करता है। ईश्वर से पृथक् होने पर चित और अचित तत्व के अस्तित्व का कोई औचित्य नहीं रह जाता है। अर्थात् चित और अचित् मे उनकी आत्मा का एक रुप मात्र है।

जब हम अद्वैतवाद और विशिष्ट अद्वैतवाद की गहराइयों को समझने का प्रयत्न करते हैं तब हमें आत्मा के सफर का ज्ञात होता है, और यह निष्कर्ष निकलता है कि शंकराचार्य के अनुसर आत्मा का परमात्मा से संयोजन आत्मानुभूति के पश्च्यात होता है। वही रामानुजन का मत यह है कि आत्मा का भाग्य बैकुंठ पर समाप्त होता है जो कि केवल आत्मत्याग से मुमकिन है। तत्पश्चात श्री इलया पेरुमल ने अपने बौद्धिक क्षमता के आधार पर शंकराचार्य के मायावद की अवधारण को कड़ी चुनौती दी और उनकी अवधारण का खंडन किया। रामानुजन सभी वर्गों के बीच सामाजिक समानता एवं सौहार्द के पैरोकार थे। उनका यह विश्वास था कि मंदिर सभी जातियों के लिए खुले रहने चाहिए तथा शिक्षा उन लोगो तक भी पहुँचनी चाहिए जो इसे वंचित है। उन्होंने भक्ति आंदोलन को पुनर्जीवित किया और उनके उपदेशों आज भी उनके विचारधारको को प्रेरित करते हैं। वे आज भी भक्तिकाल और रहस्यवादी कवियों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है। जैसे कबीर, मीराबाई, अन्नामाचार्य, भक्त रामादास, त्यागराज और कई अन्य कवियों मे उनके दर्शन की एक अलग ही छवि दिखाई देती है। इनके साहित्य से जनमानस के अंतर्मन मे वेदांत दर्शन की अनुभूति होती है। उन्होंने प्रकृति और उसके संसाधनों जैसे जल, वायु, मिट्टी, आदि को पवित्र बताते हुए इन्हें प्रदूषण से बचने की अवधारण को भी पेश किया। उनका सबसे बड़ा योगदान वासुदेव कुटुंबकम की अवधारण का प्रचार करना था। उनका एक छोटा सा प्रयास आज भी हमें हमारे बहुमूल्य ज्ञान से अभीसिंचित करने की क्षमता रखता है।

- प्रद्युम्न शर्मा
कृषि महाविद्यालय, प्रथम वर्ष

उल्लास उमंग - बारह महीनों के संग

प्रथम महीना चैत्र का
नव वर्ष का उल्लास लाए
नए नए फूल खिले पेड़ो में
खट्टमिट्ठी सी धूप भी आए

दूसरा माह वैशाख का आता
बैशाखी भी साथ ले आता
जन जन ढोल नगाड़े बजवाता
खेतों में खड़ी फसल कटवाता

तीसरा महीना ज्येष्ठ का आए
खाने को वो आम ले आए
गर्मी हमको खूब सताए
ठंडी चीजे मन को भाए।

वर्षा की फुहार ले आए
मोर झूमे नाच दिखाए।
आषाढ़ का ये चैथा महीना आए
हर दिल खिले और मुस्कुराये

हरियाली के साथ है आता
रक्षा बंधन सबको भाता।
वर्षा की बौछारें लाता
पांचवा महीना सावन कहलाता।

छठा महीना भादों जब आए
खेतों में फसलें लहरायें
कृष्ण जन्म की धूम मचाए
गणेश चर्तुथी भी साथ ले आए

भीनी भीनी सी सर्दी हो
रामलीला भी चलती हो।
दशहरा मेला देखने जाए
जब सातवां माह अश्विन आ जाए।

आठवां माह कार्तिक का आता
संग अपने दीपावली ले आता।
हर कोई घर में दीप जलाता
आँगन को रँगोली से सजाता।

दिन छोटा रात बड़ी हो जाए
शीत लहर भी खूब सताए
नौवां महीना अगहन जब आए
सिया राम का ब्याह रचाए।

दसवाँ महीना पौष का आये
चलती जाएं सर्द हवाएं।
बच्चे मिलकर पतंग उड़ायें
मकर संक्रांति पर धूम मचाएं

ग्यारहवाँ महीना माघ कहलाए
गणतंत्र का पर्व आ जाए
छा जाए बसंत मस्तानी
आ जाए ऋतुओं की रानी।

रंग-बिरंगे फूलों का गहना
बनता प्रकृति का श्रंगार है
फागुन का महीना बारहवां
लाता होली का त्यौहार है।

उपासना पांगते

अन्वेषा जैन

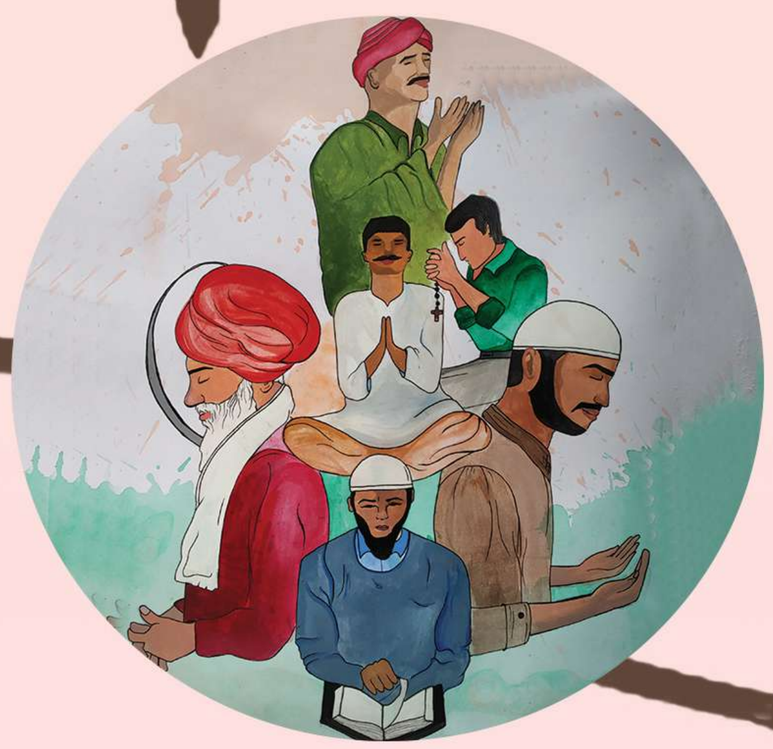

आंशिक खंतवाल

कलावीथि

प्रज्ञा

पत्रिका परिवार

मुख्य संपादक

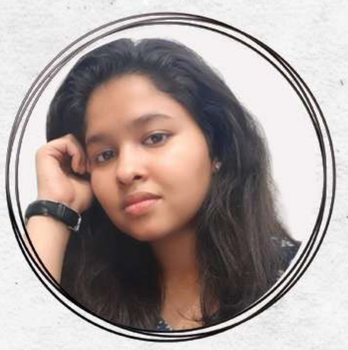

नंदिनी मिश्रा

उर्वी राय

साहिल भट्ट

अभिकल्प

विकास कुमार

आशुतोष धस्माना

विषय सहयोग

अदिति बिष्ट

विशाल कुमार

प्रद्युम्न शर्मा

गौरव उपाध्याय

शिक्षा रावत

हर्षित दुर्गापाल

भूमिका काण्डपाल

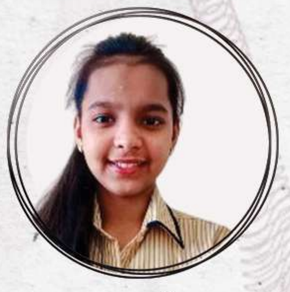

प्रज्ञा जैन

प्रायोजक :

dhanuka

SOLVERA CONSULTING

M/s ANUKRUTEE

मै0 शर्मा कन्सट्रक्शन

M/s BHOLENATH ENTERPRISES

DEEPAK DHANDA CONTRACTOR

NAINITAL NATURALS AND ASSOCIATES

सांस्कृतिक चेतना परिषद्

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एंव प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर

संपर्क हेतु

scppsgbpuat@gmail.com

Sanskritik Chetna Parishad

@scpgbpuat

Sanskritik Chetna Parishad

Scpps.co.in

Sanskritik Chetna Parishad